अध्याय - द्वितीय

अध्याय - द्वितीय
संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसन्धान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्यायों में जहां उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। जिससे किसी कार्य की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती एवं अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के सबंध में अन्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है। पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है अर्थात किसी भी विषय क्षेत्र का साहित्य ही उस आधारशिला के समान है जिस पर सारे भविष्य का कार्य आधारित होता है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुंसधान में बहुत महत्व है। प्रस्तुत समस्या से संबंधित साहित्य इस प्रकार है।

2.2 संबंधित साहित्य -

अर्चना भटटाचार्य एवं निर्मला शर्मा (1988)

समस्या – सह शैक्षिक गतिविधियों के प्राथमिक विद्यालयों के स्कूल कार्यक्रम की स्थिति

प्रस्तावना

शैक्षिक और गैर शैक्षिक गतिविधियां बच्चों के चहुमुखी विकास के लिए स्कूल के कार्यक्रम में समान महत्व मिलना चाहियें यह अध्ययन असम के जोरहाट जिले के प्राथमिक स्कूलों में से एक स्कूल के कार्यक्रम में सह शैक्षिक गतिविधियों की स्थिति को देखने के लिए किया गया था नमूने के रूप में जिले के तीन शिक्षा खंडों से 50 प्राथमिक विद्यालयों के लिया गया प्राथमिक डेटा साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्रित किया

गया एवं स्कूली कार्यकर्ताओं के साथ साक्षात्कार स्कूली शिक्षकों के साथ सामूहिक प्रतिवादित चर्चा द्वितीय डेटा शैक्षिक ब्लाकों का मूल्यांकन करके किया गया था अध्ययन से पता चला कि शह शैक्षिक गतिविधियों स्कूल दिनचर्या में एक उचित जगह निर्धारित नहीं है। शिक्षकों के ओपचारिक सह शैक्षिक गतिविधियों को संभालने के प्रशिक्षण के किसी भी तरह की व्यवस्था नहीं है फिर बच्चों के चहुमुंखी विकास के लिए नई शैक्षिक प्रणाली का विकास किया गया विद्यालय एक ऐसी जगह है जहां छात्रों के विभिन्न कौशल उभर कर सामने आये।

उद्देश्य –

1. प्राथमिक विद्यालय द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रम के क्षेत्र में सह शैक्षिक मूल्यांकन का अध्ययन
2. असम के जोरहाट जिले के प्राथमिक विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की स्थिति जानने के लिए
3. शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति जागरूकता का अध्ययन

विधि –

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयोग किया गया जिसमें गुणात्मक एवं मात्रात्मक दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया।

नमूना –

असम के जोरहाट जिले के 50 प्राथमिक विद्यालयों का एक नमूना सोदेश्य प्रतिचयन तकनीक द्वारा चुना गया पहले चरण में 6 शैक्षिक ब्लाकों को चुना गया। चयनित ब्लाकों में 50 प्राथमिक विद्यालयों में (30 प्राथमिक 20 उच्च प्राथमिक) चुना गया सोदेश्य नमूने विधि से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, अनुसूचित जाति एंव जनजाति क्षेत्र के स्कूल को चुना गया 100 नमूना विद्यालयों से 55 शिक्षकों का एक प्रतिनिधि नमूने के रूप में चयन किया गया।

उपकरण एवं डेटा संग्रहण तकनीक –

शिक्षकों के लिए एक प्रश्नावली का निर्माण किया एवं सभी के साथ समूह वार्तालाप किया जिसमें सह शैक्षिक पाठयक्रम से सबंधित चर्चा हुई ब्लाक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी ब्लाक संसाधन शिक्षा अधिकारियों से बातचीत की जिला स्वर के कार्यकर्ताओं से बातचीत की गई ग्रेड मूल्यांकन पत्रक, छात्र रिकार्ड कार्य, माध्यमिक डेटा जिला मिशन निर्देशक कार्यालय से एकत्रित किये गये।

डेटा का विश्लेषण –

साक्षात्कार क्षेत्र नोट टिप्पणी और दस्तावेज के माध्यम से एकत्रित किये गये, मात्रात्मक डेटा के लिए सरल संख्याकी का प्रयोग किया गया।

D- 350

निष्कर्ष –

सह शैक्षिक गतिविधियों ने स्कूल में एक उचित स्थान नहीं पाया है। वास्तव में कोई परिवर्तन स्कूली दिनचर्या में नहीं किया है। यहां निगरानी हेतु परिवेक्षण प्रतिक्रियों के लिए राज्य प्राथमिकारी से दिशा निर्देश नहीं है। शिक्षकों की अनुपस्थिति पाई गई व शैक्षणिक विषयों के लिए कोई गंभीर दिनचर्या का निर्माण नहीं किया गया असम के प्राथमिक विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की कोई व्यवस्था नहीं है जबकि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन कोई नई अवधारणा नहीं है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में इसे अधिक जोर दिया गया है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा असम माध्यमिक विद्यालय में 1998 में इसे पेश किया गया था केवल सैद्धान्तिक रूप में ही शिक्षकों को इसके बारे में पता है। इस स्थिति का एक प्रमुख कारण यह है कि औपचारिक प्रशिक्षण के संबंध में स्कूल के पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। शैक्षिक गतिविधियों का महत्व के अलावा सह शैक्षिक गतिविधियों को महत्व दिया जाना चाहिये।

संदर्भ –

1. अग्रवाल एम (2000) सतत और व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से गुणवत्ता की और स्कूलों की भारतीय शिक्षा 26.2.11 अगस्त पत्रिका
2. मानव संसाधन (1986) शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति विकास मंत्रालय नई दिल्ली
3. माध्यमिक शिक्षा योजना (1998) माध्यमिक मदरसों स्कूलों में सतत और व्यापक मूल्यांकन की योजना लेखक गुवाहाटी

2. कोल लोकेश भादवाल एवं सतीस चंद (1989)

समस्या – उपलब्धिता, प्रेरणा एवं मानसिक तनाव पर ईकाई परीक्षण का अध्ययन

उद्देश्य –

1. हाईस्कूल के विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा पर ईकाई परीक्षण का अध्ययन करना
2. हाई स्कूल के विद्यार्थियों के मानसिक तनाव पर ईकाई परीक्षण का अध्ययन

निष्कर्ष –

1. विद्यार्थियों के प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह में उपलब्धि एवं प्रेरणा में समानता है।
2. प्रयोग के पहले एवं 20 दिन बाद भी प्रयोगात्मक समूह एवं नियंत्रित समूह में मानसिक तनाव पाया गया।

3. राव आर.एस. और भारती एम 1989

समस्या – केन्द्रीय विद्यालयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन

उद्देश्य –

1. विभिन्न विषयों एवं विभिन्न विद्यालयों में प्रस्तुती एवं अनिश्चितता के स्तर के बीच में सह संबंध ज्ञात करना।
2. वार्षिक परीक्षा में सतत मूल्यांकन पद्धति के प्रभावों का अध्ययन करना।
3. अनिश्चितता के संदर्भ में माता–पिता के गुणों एवं वार्षिक अंक प्राप्ति के मध्य सहसंबंध ज्ञात करना

निष्कर्ष –

1. माता की शिक्षा का सतत मूल्यांकन पर प्रभाव पाया गया।
2. माता एवं पिता की आय का विद्यार्थियों के वार्षिक अंकों पर प्रभाव देखा गया।
3. माता पिता की आय भी इस तंत्र को प्रभावशाली बनाने में सहायक है।

4. डॉ.पी. मंजूला राव

समस्या –

सतत और व्यापक मूल्यांकन की प्रभावशीलता का पदभार शिक्षकों के मूल्यांकन

प्रस्तावना –

हाल के वर्षो में यहां गुणवत्ता के विकास की समस्या नहीं है गुणवत्ता प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर सभी शिक्षार्थियों की उपलब्धि है लेकिन इस लक्ष्य को बहतर बनाने के लिए शिक्षार्थियों की गुणवत्ता और सार्वभौमिकरण के लिए पूरी तरह से

गुणवत्ता और सार्वभौमिकरण के लिए पूरी तरह से गुणवत्ता में सुधार के कारण किया जा सकता है। सीखने की प्रक्रिया और अनुचित मूल्यांकन प्रथाओं जो कर रहे हैं अपूर्ण शिक्षण के लिए "पांरपरिक और अपने दायरे में सर्कीण आदेश में कुछ गुणवत्ता के बारे में लाने के लिए" सुधार हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की सिफारिश की है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का विकास हर चरण में होना चाहिए। शिक्षण और मूल्यांकन के संदर्भ में सुनिश्चित विकास होना चाहिए। शिक्षा का न्यूनतम स्तर तक अनुवर्ती प्राथमिक स्तर पर प्रत्येक विषय के लिऐ होना चाहिए। दक्षता के विकास की दृष्टि से मूल्यांकन प्रथाऐं होना आवश्यक है। यह एक बहुत अच्छी तरह से ज्ञात तथ्य यह है कि मूल्यांकन प्रथाओं में किए गए लक्ष्य है शिक्षार्थियों के लिए ज्ञान और समझ का परिणाम, उपाय, उपेक्षा कौशल, मानसिक क्षमताओं का मूल्यांकन स्कूली विकास का प्रमुख क्षेत्र है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए कम से कम भुगतान व्यवस्था होना चाहिए शिक्षाप्रद एवं छात्रों के व्यक्तिगत विकास के मूल्यांकन के लिये राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं कार्य योजना 1992 के बाद स्कूली शिक्षा 1986 और 2000 की राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा में दोहराया गया है कि शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के विकास की जरूरत है।

सभी शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्षेत्रों का व्यापक मूल्यांकन किया जाना चाहिये व्यापक एवं सतत (निरन्तर) मूल्यांकन करने के तरीके सफाई का मूल्यांकन एवं सामाजिक एवं व्यक्तिगत गुणों का मूल्यांकन है उपकरणों का मतलब व्यापक मूल्यांकन ना केवल सभी जांच में मदद करना है।

उद्देश्य –

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभाव का अध्ययन करना है प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यांकन के तरीकों पर का मूल्यांकन करना।

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के द्वारा शिक्षकों के प्रशिक्षण को लागू करने से पहले मूल्यांकन तरीकों का अध्ययन करना।
2. सतत और व्यापक मूल्यांकन पर प्रशिक्षण पैकज का अध्ययन
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रभाव का अध्ययन

परिकल्पना –

1. सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण कार्यक्रम एक प्रभाव है।
2. जागरूकता एवं शिक्षकों के मूल्यांकन के कौशल का प्रभाव
3. कक्षा के अनुदेश के दौरान शिक्षकों के कौशल का अध्ययन
4. अध्यापकों की रिकाडिंग और रिपोटिंग की प्रक्रिया के रूप में मूल्यांकन कार्य

करती है।

डिजाइन और अध्ययन का नमूना

अध्ययन के न्यादर्श प्रकृति में विकास और प्रभाव था जिसमें एक प्रशिक्षण पैकेज शामिल किया गया बाहर कई प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों पर प्रयास की थी के विकास दक्षिणी क्षेत्र में संस्था के पीसी कार्यक्रम के एक भाग के रूप में सीसीई का प्रभाव प्रशिक्षण कार्यक्रम सीसीई और अध्यापकों के प्रति जागरूकता के अध्ययन में शामिल उनके मूल्यांकन प्रथाओं जो अध्ययन का मुख्य लक्ष्य थे

अध्ययन का विश्लेषण–

शिक्षकों के प्रति जागरूकता के विश्लेषण और सतत और का अभ्यास व्यापक मूल्यांकन तृतीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव से संबंधित परिकल्पना का परीक्षण करने के लिए सतत और जागरूकता और मूल्यांकन से जानकारी शिक्षक कार्यक्रम के माध्यम से एकत्र की गई थी।

निष्कर्ष –

इस अध्ययन के प्रयास का मूल्यांकन कौशल में सुधार करने में फलदायी रहा था विद्यार्थियों में निरंतर राय और सुधार द्वारा उपलब्धि की कक्षा शिक्षण रणनीतियों के मूल्यांकन के परिणामों पर आधारित है एवं स्कूली शिक्षा में सुधार के मूल्यांकन प्रणाली के लिए की गई सिफारिशों एवं कुछ राज्यों में किये गये प्रयास से ग्रेडिंग प्रणाली लागू की है सिर्फ शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि यह शैक्षिक को शामिल करना होगा दोनों शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्षेत्रों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की आवश्यकता महसूस की है कौशल मूल्यांकन की दक्षता की आवश्यकता है। मूल्यांकन करने के लिए उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के साथ अच्छी तरह से एकीकृत करने में सक्षम हो सकता है।

संदर्भग्रंथ –

शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद 2000 राष्ट्रीय पाठयचर्या स्कूली शिक्षा के लिए फ्रेमवर्क 2000 प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित सचिव एनसीईआरटी श्री अरविंदो मार्गदर्शक नई दिल्ली

शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद 1998 राष्ट्रीय पाठयचर्या प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए फ्रेमवर्क 1998 प्रकाशक द्वारा प्रकाशित सचिव एनसीआरटी द्वारा डिवीजन श्री अरविंदों मार्ग नई दिल्ली

5. कोर दीपिका 1991

दो विभिन्न स्कूलों में उपलब्धि पर मानसिक तनाव तथा बुद्धिमत्ता का अध्ययन

उद्देश्य –

दो विभिन्न स्कूल तंत्र में शैक्षिक उपलब्धि पर मानसिक तनाव एवं बुद्धिमत्ता का संमेकित रूप से तथा अलग–अलग प्रभाव का अध्ययन

निष्कर्ष –

1. पब्लिक स्कूल के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।
2. मानसिक तनाव एवं बुद्धिमत्ता में सार्थक अन्तर पाया गया जो कि पब्लिक स्कूल के लिए 7 प्रतिशत एवं सरकारी स्कूलों के लिए 9–30 प्रतिशत पाया गया।

6. जैन जयन्ती आर 1990

"किशोर छात्राओं के आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक लक्ष्य के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करना।"

उद्देश्य –

1. किशोर छात्राओं की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक लक्ष्यों के मध्य संबंध ज्ञात करना।
2. धनात्मक आत्म अवधारणा एवं उच्च ज्ञानात्मक क्षमता के मध्य संबंध ज्ञात करना।

निष्कर्ष –

1. उच्च धनात्मक आत्म अवधारणा बाली छात्राओं में उच्च शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करती है।
2. उच्च आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक लक्ष्यों के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया गया
3. धनात्मक आत्म अवधारणा एवं उच्च ज्ञानात्मक क्षमताऐं सार्थक रूप में साथ साथ मिलती है।